JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

धीमी गति से सीखने की समस्याएं: कारण, रोकथाम और उपचारात्मक शिक्षण के साथ हस्तक्षेप

@सुश्री परवीना हरिता हिसार (ए36735) सहायक प्रोफेसर विशेष शिक्षा विभाग भारत
@@सुश्री पूजा काजला भिवानी (बी 73493) साइन इंटरप्रेटर

प्रस्तावना :

हाल के सर्वेक्षण में हमारे द्वारा मध्य प्रदेश नानाखेड़ा शासकीय विद्यालय में 140 बच्चों का आंकलन किया गया और उस आंकलन के दौरान पाया गया कि ज्यादातर बच्चों में धीमी गति से पाठन लेखन गणितीय समस्याएं देखी गई है यह सभी समस्याएं कई कारणों से बच्चों में उभरी हुई है जैसा कि हमारे द्वारा बताया गया कि धीमी गति से पढ़ने या सीखने के कई कारण हो सकते हैं कम ध्यान ,स्वास्थ्य समस्याएं, माता-पिता का व्यस्त होना ,माता पिता गरीब होना, अनपढ़ होना हिंसा पक्षपात .अकड़पन, भावनात्मक रूप से बच्चे का कमजोर होना तथा आसपास का माहौल का प्रभाव सामाजिक खतरे आदि इन सब कारणों के अलावा भी अन्य ऐसे और भी कारण हैं जैसे कक्षा कक्ष में अध्यापक का बच्चे पर ध्यान कम होना बच्चे को प्यार ना करना शिक्षक की अभिवृत्ति उसका व्यवहार आदि सब के कारण भी बच्चे पर बुरा असर हो सकता है और उसका पढ़ने लिखने से मन हट सकता है इन सभी कारणों से बच्चे की रुचि पढ़ाई में कम दिखाई दे सकती है

धीमी गति से सीखने वालों के कारण

वास्तव में धीमी गति से सीखने वाले सामान्य छात्र होते हैं जो पारंपरिक रूप से स्वीकार्य शिक्षा प्रणाली के तहत अध्ययन करने में रुचि नहीं रखते हैं। ऐसे कई कारक हैं जो धीमी गति से सीखने की प्रक्रिया का कारण बन सकते हैं।

कम ध्यान अवधि धीमी गति से सीखने वालों का ध्यान अवधि कम होती है जिसके साथ वे लंबे समय तक ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते हैं। उन्हें छोटी याददाश्त की समस्या होती है और उन्हें याद नहीं रहता कि वे क्या सीखते हैं। वे आसानी से ऊब जाते हैं और सीखने की प्रक्रिया के प्रति कोई रुचि नहीं विकसित करते हैं।

जिन बच्चों की दृष्टि खराब होती है, वे ब्लैक बोर्ड पर जो लिखा है उसे ठीक से नहीं देख पाएंगे और ठीक से कॉपी नहीं कर पाएंगे। यह बच्चे के विकास और विकास और समाज में कार्य करने की क्षमता को भी प्रभावित करता है। यह आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को भी प्रभावित करता है जिससे अवसाद हो सकता है। यदि इसका ठीक से इलाज नहीं किया गया तो बच्चा कक्षा में पीछे रह सकता है।

स्वास्थ्य समस्या और अनुपस्थिति स्वास्थ्य समस्या धीमी गति से सीखने का मुख्य कारण है। खराब स्वास्थ्य बच्चे के विकास और विकास में बाधा डालता है। यह स्पष्ट है कि बार-बार अनुपस्थिति बच्चे की प्रगति को प्रभावित कर सकती है जब स्कूल घर से पूरक नहीं होता है यानी जब माता-पिता को बच्चे की शिक्षा में कोई दिलचस्पी नहीं होती है। यह सच हो सकता है कि कक्षा से लगातार अनुपस्थिति की अवधि कभी-कभार लंबी अवधि की तुलना में अधिक हानिकारक होती है। बच्चा अपने स्तर के सहपाठियों का सामना नहीं कर पाएगा और अपना आत्मविश्वास खो देता है। नतीजतन, वह खुद को सहपाठियों से अलग कर लेता है और धीरे-धीरे धीमी गति से सीखने वाला बन जाता है

माता-पिता (व्यस्त, अनपढ़ और गरीब) जब माता-पिता के पास अपने बच्चे के लिए समय नहीं होता है, तो वह असुरक्षित और अलग-थलग महसूस कर सकता है। वह अपनी समस्याओं या स्कूल में आने वाली कठिनाइयों को साझा नहीं कर सकता था। बच्चा सब कुछ अपने दिमाग में रखता है और शिक्षा और स्कूल के प्रति घृणा पैदा करता है। अनपढ़ माता-पिता, जो मानसिक रूप से पिछड़े हैं और उन्हें शिक्षा के बारे में कोई जानकारी नहीं है, अपने बच्चे की शिक्षा की परवाह नहीं करते हैं। कुछ माता-पिता अपने बच्चे को अच्छे अंक लाने के लिए मजबूर करते हैं। नहीं तो वे बच्चे को पीटते हैं जिससे स्थिति और बिगड़ जाती है। व्यस्त माता-पिता और गरीब माता-पिता सुबह जल्दी अपने काम पर चले जाते हैं और शाम को देर से आते हैं और अपने बच्चों के साथ समय नहीं निकालते हैं और उनके पास उनकी पढ़ाई या उनकी समस्याओं के बारे में पूछताछ करने का समय नहीं होता है, जिसके परिणामस्वरूप सीखने की प्रक्रिया में रुकावट आती है। संभवतः अपूरणीय है।

हिंसा और पक्षपात दिखाना स्कूलों में हिंसा धीमी गति से सीखने का एक और कारण है। बच्चा शिक्षक के प्रति घृणा विकसित करता है और अपनी पढ़ाई वापस ले लेता है क्योंकि छात्रों को बेंत मारने से सीखने की क्षमता पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। बच्चे को अक्सर बुरे सपने आते हैं और वह पढ़ाई की दिशा में कोई प्रगति नहीं दिखाएगा। कभी-कभी यह भावनात्मक समस्याओं और आक्रामकता की ओर ले जाता है, जो संज्ञानात्मक क्षमताओं को प्रभावित करता है। कुछ शिक्षक छात्रों के प्रति पक्षपात दिखाते हैं जो सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है और बच्चा शिक्षक के साथ-साथ विषय से भी नफरत करता है।

अक्खड़पन वह बच्चा जो अत्यधिक सुरक्षात्मक माता-पिता से, भय उत्पन्न होने से, दुर्घटनाओं से, सावधान रहने की चेतावनियों से, पर्यावरणीय बाधाओं से या अभ्यास करने के अवसर की कमी से बाधित होता है, वह अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तुलना में अजीब हो जाता है। वह उनके साथ नहीं रह सकता और परिणामस्वरूप वह उनके खेल से बाहर हो जाता है। वह जल्द ही सोचने लगता है कि वे बेहतर हैं और हीन भावना विकसित कर लेते हैं और धीरे-धीरे वह अपने दोस्तों से और सीखने से खुद को वापस ले लेगा।**भावनात्मक और सामाजिक खतरे** यदि बच्चा बहुत अधिक अप्रिय भावनाओं और बहुत कम सुखद भावनाओं का अनुभव करता है, तो यह जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण को विकृत करेगा और एक अप्रिय स्वभाव के विकास को प्रोत्साहित करेगा। जिस बच्चे को दूसरों से स्नेह नहीं मिलता है, उसके आत्म-बंधन होने की संभावना होती है, और यह उसके साथ भावनात्मक आदान-प्रदान करने से रोकता है। यदि बच्चे की उपेक्षा की जाती है और उचित देखभाल प्रदान नहीं की जाती है, तो बच्चा एक नकारात्मक भावना का निर्माण करता है और शुरू में अपने माता-पिता और बाद में अन्य लोगों से बचता है, और वे खुद को बाहरी दुनिया से अलग कर लेते हैं। इसके अलावा, एक उपेक्षित बच्चा अस्वीकृत और असुरक्षित महसूस करता है। यह अन्य बच्चों के साथ मेलजोल करने के बच्चे के विकासशील कौशल को प्रभावित कर सकता है।

कोविड-19 के चलते भी बच्चों की सीखने की प्रक्रिया गति धीमी हो गई है उस दौरान बच्चों का घरों में बंद रहना एक ही पर्यावरण में अपने आप को विकसित करना ऑनलाइन कक्षाओं का होना आदि ने उनके सीखने की प्रक्रिया को धीरे किया है घर में पढ़ाई पूरी की और अगली कक्षाओं में पंजीकरण किया गया लेकिन छात्र को पिछली कक्षा के बारे में कोई भी ज्ञान नहीं हुआ ऐसा पिछले 2 सालों से हुआ यह भी एक बहुत बड़ा कारण है कि बच्चे की सीखने की गति बहुत धीमी हो गई है क्योंकि बच्चे के लेबल के अनुसार उसने वह सीखा ही नहीं और उसे अगली कक्षा में कर दिया गया |

एक तस्वीर उपचारतमक शिक्षण देते हुए

गणित से संबधित

उपचार/निदान/ रोकथाम :

धीमी गति से पढ़ने की व सीखने की कोई बड़ी समस्या नहीं है इसको आसानी से दूर किया जा सकता है जो भी कारण इसके होने को अत्यधिक प्रभावित करते हैं हम या हमारे द्वारा उन सभी कारणों को कम करके बच्चे के शैक्षणिक क्षेत्र में वृद्धि कर सकते हैं जिसके माध्यम से बच्चा कक्षा कक्ष में अन्य बच्चों के साथ मिलकर अपनी कक्षा के पाठ्यक्रम को पूरा कर सकता है इनके अलावा विशेष शिक्षकों के माध्यम से उपचारात्मक शिक्षण व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम के द्वारा भी छात्र के लिए अलग तरह का पाठ्यक्रम बनाया जाता है और उसे पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा पूरा कराया जाता है इन सब को करने के बाद छात्र अपने कक्षा कक्ष के छात्रों के साथ अच्छे से सह संबंध स्थापित कर अपने व्यवहार में भी परिवर्तन करता है

बच्चों को को पाठ्य सहगामी गतिविधियों के साथ शिक्षण देते हुए

बच्चे मैं धीमी गति से सीखने की प्रक्रिया को रोका जा सकता है बच्चे के साथ माता-पिता को ज्यादा से ज्यादा समय व्यतीत करना उसके गृह कार्य में उसकी सहायता करना बच्चे के दैनिक क्रियाकलापों के बारे में हर दिन पूछताछ करना बच्चे को बाहर घूमने के लिए लेकर जाना बच्चे की समय से सभी जरूरत की वस्तुओं को लेकर आना और उसके उपयोग के बारे में चर्चा करना घर में सभी सदस्यों के साथ बच्चे का बराबर इंटरेक्शन होना इन सभी कारणों के माध्यम से बच्चे में भावनात्मक संवेग आदि सभी मजबूती से परिपक्व हो सकते हैं और बच्चा नैतिक मूल्यों को भी अपने घर के वातावरण में अच्छे से सीख सकता है बच्चे कोघरेलू हिंसा से दूर रखना घर में बच्चों से कभी भेदभाव ना करना उसके स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना|

Reference:

- American Psychiatric Association. Diagnostic and Statistical Manual of Mental Disorders. 4th ed. (revised). Washington, DC: American Psychiatric Association; 2000
- Peltopuro M, Ahonen T, Kaartinen J, Seppälä H, Närhi V. Borderline intellectual functioning: A systematic literature review. Intellect Dev Disabil 2014
- Kamat VV. Measuring Intelligence of Indian Children. 4th ed. London, UK: Oxford University Press; 1967
- Sharma R. Revised Kuppuswamy's socioeconomic status scale: Explained and updated. Indian Pediatr 2017